अध्याय 1: श्रम विभाजन और जाति प्रथा (डॉ. भीमराव अंबेदकर) – Class 10 Hindi Godhuli Part 2

प्रिय छात्रों, **Bihar Board Class 10 Hindi Exam 2026** की शानदार तैयारी के लिए हम आपके लिए हिंदी गोधूलि भाग 2 का पहला और सबसे महत्वपूर्ण अध्याय – **"श्रम विभाजन और जाति प्रथा"** – की पूरी **Study Material PDF + Notes** लेकर आए हैं।

इस अध्याय से जुड़े प्रश्न हर साल परीक्षा में पूछे जाते हैं। इसलिए यहाँ आपको एक ही जगह पर मिलेगा:

- **पिछले वर्षों के महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs with Answers & Explanation)** – 19 प्रश्नों का वर्षवार संकलन।
- **पाठ का संपूर्ण सारांश (Summary in Hindi)** – अंबेदकर जी के विचारों को सरल और स्पष्ट भाषा में।
- **महत्वपूर्ण नोट्स** – परीक्षा में पूछे जाने योग्य मुख्य बिंदु।
- **Text + PDF Material** – ताकि आप आसानी से इसे Download और Copy कर सकें।

इस **Study Material** को पढ़ने के बाद आप **Bihar Board Class 10 Hindi Exam 2026** में आने वाले किसी भी प्रश्न को आत्मविश्वास के साथ हल कर पाएंगे।

कक्षा 10वीं – हिन्दी, गोधूलि भाग-2 (बिहार बोर्ड)
#1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (निबंध) - (डॉ. भीमराव अंबेडकर)

बिहार बोर्ड कक्षा 10वीं हिंदी: गोधूलि भाग 2

अध्याय 1: श्रम विभाजन और जाति प्रथा (डॉ. भीमराव अंबेदकर)

लेखक परिचय: डॉ. भीमराव अंबेदकर (Dr. B. R. Ambedkar)

- **जन्म:** 14 अप्रैल, 1891 ई., महू (मध्य प्रदेश)।
- **निधन:** दिसम्बर 1956 ई., दिल्ली।
- **शिक्षा:** बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन पर **न्यूयॉर्क (अमेरिका)** और फिर **लंदन** से उच्च शिक्षा प्राप्त की।
- **प्रेरक: बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले।**
- **प्रमुख रचनाएँ:** *द कास्ट्स इन इंडिया: देयर मैकेनिज्म, हू आर शूद्राज, द अनटचेबल्स, बुद्धा एंड हिज धम्मा, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट, एनीहिलेशन ऑफ कास्ट* (प्रस्तुत पाठ का मूल), आदि।
- **योगदान: भारतीय संविधान के निर्माता** (जनक) और 'मानव मुक्ति के पुरोधा' कहे जाते हैं।

#1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (निबंध) - (डॉ. भीमराव अंबेडकर)

पाठ का सारांश (Summary)

प्रस्तुत पाठ डॉ. भीमराव अंबेदकर के विख्यात भाषण **'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट'** (जाति का विनाश) का हिंदी रूपांतरण है। यह निबंध भारतीय समाज में जाति प्रथा के हानिकारक पहलुओं को उजागर करता है।

लेखक अंबेदकर बताते हैं कि जाति प्रथा को आधुनिक सभ्य समाज भले ही **श्रम विभाजन** का एक रूप माने, लेकिन यह श्रमिकों को **ऊँच-नीच** के आधार पर विभाजित करती है। लेखक के अनुसार, श्रम विभाजन के नाम पर यह विभाजन **अस्वाभाविक** है, क्योंकि यह मनुष्य की **रुचि, योग्यता या क्षमता** पर आधारित नहीं होता, बल्कि जन्म से ही उसका पेशा तय कर देता है।

लेखक तर्क देते हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए अरुचि का कार्य करना **घोर विवशता** है। जब काम करने वालों का मन नहीं लगता, तो न तो कोई कुशलता आती है और न ही आर्थिक उन्नति होती है।

सबसे खतरनाक पहलू यह है कि **संकट के समय** (जैसे कि उद्योग के बंद हो जाने पर) भी जाति प्रथा व्यक्ति को अपना पैतृक पेशा छोड़कर **दूसरा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती**। इस कारण भारत में **बेरोजगारी** गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या बनी हुई है।

अंत में, लेखक एक **आदर्श समाज** की कल्पना करते हैं। उनका आदर्श समाज वह होगा जहाँ **स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा (भ्रातृत्व)** हो। यह भाईचारा ऐसा हो जैसे दूध और पानी का मिश्रण हो, जिसमें समाज के सभी लोग एक-दूसरे के हितों में सहभागी हों और एक-दूसरे के प्रति आदर का भाव रखें।

कक्षा 10वीं – हिन्दी, गोधूलि भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (निबंध) - (डॉ. भीमराव अंबेडकर)

निबंध का नोट्स (महत्वपूर्ण तथ्य)

1. **विडम्बना:** आधुनिक सभ्य समाज में भी **'जातिवाद के पोषकों'** की कमी नहीं है, जो जाति प्रथा का समर्थन करते हैं।
2. **समर्थकों का तर्क:** वे जाति प्रथा को **कार्य-कुशलता (Efficiency)** के लिए आवश्यक श्रम विभाजन का ही एक रूप मानते हैं।
3. **लेखक का खंडन:** जाति प्रथा **अस्वाभाविक विभाजन** है क्योंकि यह मनुष्य की **रुचि** पर आधारित नहीं होती और जन्म से ही पेशा तय कर देती है।
4. **बेरोजगारी का कारण:** जाति प्रथा भारत में **बेरोजगारी का प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण** है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं देती।
5. **हानिकारक प्रभाव:** यह व्यक्ति की **स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्मशक्ति** को दबाकर उसे अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर **निष्क्रिय** बना देती है।
6. **आदर्श समाज:** सच्चा लोकतंत्र **स्वतंत्रता (Liberty), समता (Equality) और भ्रातृत्व (Fraternity)** पर आधारित होना चाहिए। भ्रातृत्व (भाईचारा) दूध और पानी के मिश्रण जैसा होना चाहिए।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा : प्रश्न और उत्तर (NCERT)

1. लेखक किस 'विडम्बना' की बात करते हैं? 'विडम्बना' का स्वरूप क्या है?

उत्तर : लेखक उस विडम्बना (उपहास या दुखद स्थिति) की बात करते हैं कि आज भी सभ्य समाज में जातिवाद के समर्थक (पोषक) बड़ी संख्या में मौजूद हैं। विडम्बना का स्वरूप यह है कि जाति प्रथा श्रम विभाजन के नाम पर व्यक्ति को केवल उसके जन्म के आधार पर काम सौंप देती है, जो उसकी क्षमता और रुचि की अनदेखी है।

2. जाति प्रथा भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती?

उत्तर : जाति प्रथा को स्वाभाविक श्रम विभाजन नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्वाभाविक श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि और क्षमता पर आधारित होता है। इसके विपरीत, जाति प्रथा व्यक्ति को उसके जन्म से पहले ही एक पेशे में बाँध देती है। इसमें व्यक्ति की स्वेच्छा (इच्छा) का कोई स्थान नहीं होता और व्यक्ति को अनिच्छा से काम करना पड़ता है।

3. जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

उत्तर : जाति प्रथा लोगों को उनके पैतृक पेशे से बाँध देती है। यदि समय के साथ वह पेशा बदल जाए, या व्यक्ति उसमें कुशल न हो, तो भी वह उसे छोड़ नहीं सकता। पेशे के बदलने की अनुमति न होने के कारण कई लोगों को भूखों मरने की नौबत आ जाती है। इस प्रकार, पेशा बदलने की मजबूरी न होने के कारण यह बेरोजगारी का प्रत्यक्ष और प्रमुख कारण है।

4. लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है?

उत्तर : लेखक ने जाति प्रथा को निम्नलिखित पहलुओं से हानिकारक बताया है:

- यह बेरोजगारी का मुख्य कारण है क्योंकि पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती।
- यह मनुष्य की स्वाभाविक रुचि और स्वेच्छा को दबा देती है।
- यह व्यक्ति को अनिच्छा से काम करने को मजबूर करती है, जिससे उसकी कार्यकुशलता घट जाती है।
- यह मानवीय स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांत के खिलाफ है।

5. आपके विचार से क्या जाति प्रथा श्रम विभाजन का दूसरा रूप है?

उत्तर : नहीं, जाति प्रथा श्रम विभाजन का दूसरा रूप नहीं है। श्रम विभाजन का अर्थ है कुशलता के आधार पर काम का बँटवारा, जबकि जाति प्रथा का अर्थ है मनुष्य को जन्म के

आधार पर उसके पैतृक पेशे से बाँध देना। यह केवल एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था है, न कि सही श्रम विभाजन।

6. लेखक आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या किसे मानते हैं और क्यों?

उत्तर: लेखक आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या जाति प्रथा को मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जाति प्रथा लोगों को उनके

निर्धारित काम को करने के लिए बाध्य करती है, भले ही उसमें उनकी रुचि न हो। जब कोई व्यक्ति अनिच्छा से काम करता है, तो वह कम काम करता है और उसकी उत्पादकता (Productivity) कम हो जाती है, जो समाज और राष्ट्र के लिए सबसे हानिकारक है।

7. लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है?

उत्तर: (यह प्रश्न 4 के समान है, लेकिन अधिक विस्तृत उत्तर यहाँ दिया गया है) लेखक ने इसे एक हानिकारक प्रथा निम्नलिखित पहलुओं से दिखाया है:

- यह व्यक्ति को आजीवन एक ही पेशे में बाँधकर रखती है।

- यह व्यक्ति को पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, जिससे भूखे मरने की नौबत आती है।
- यह व्यक्ति की रुचि और स्वाभाविक प्रेरणा को खत्म कर देती है, जिससे कार्यकुशलता घटती है।
- यह समाज को ऊँच-नीच में बाँटकर भाईचारे को खत्म करती है।

8. सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है?

उत्तर: सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने निम्नलिखित विशेषताओं को आवश्यक माना है:

- भाईचारा (Fraternity): समाज में दूध और पानी के मिश्रण जैसा भाईचारा होना चाहिए।
- समानता और स्वतंत्रता: सभी को समान अवसर और अपनी रुचि का काम चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- सतत संचार: सभी लोगों के बीच लगातार संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान (संचार) होना चाहिए।
- सामुदायिक जीवन: लोगों के बहुविध हितों में सबकी साझेदारी होनी चाहिए।

कक्षा 10वीं – हिन्दी, गोधूलि भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (निबंध) - (डॉ. भीमराव अंबेडकर)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions 19 MCQs) - उत्तर और व्याख्या

1. बाबा साहेब भीमराव अंबेदकर का जन्म किस परिवार में हुआ था? [2023AI]

(A) ब्राह्मण

(B) कायस्थ

(C) क्षत्रिय

(D) दलित

सही उत्तर: (D) दलित

व्याख्या: डॉ. भीमराव अंबेदकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान पर एक दलित (महार) परिवार में हुआ था। उनका यह अनुभव ही उनके आगे के संघर्ष और लेखन का आधार बना।

2. भीमराव अंबेदकर के चिंतन एवं रचनात्मकता के प्रेरक व्यक्ति कौन थे? [2023AII]

(A) बुद्ध

(B) कबीर

(C) ज्योतिबा फुले

(D) इनमें से सभी

सही उत्तर: (D) इनमें से सभी

व्याख्या: डॉ. अंबेदकर ने बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले को अपने जीवन के तीन प्रमुख प्रेरक व्यक्ति माना। इन तीनों से उन्हें समानता, सामाजिक न्याय और अंधविश्वासों के विरोध की प्रेरणा मिली।

3. 'हू आर शूद्राज' किनकी रचना है? [2023AII]

(A) भीमराव अंबेदकर की

(B) अमरकांत की

(C) महात्मा गाँधी की

(D) यतीन्द्र मिश्र की

सही उत्तर: (A) भीमराव अंबेदकर की

व्याख्या: यह डॉ. भीमराव अंबेदकर की एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें उन्होंने शूद्रों की उत्पत्ति, इतिहास और सामाजिक स्थिति का विस्तृत विश्लेषण किया है।

4. लेखक भीमराव अंबेदकर आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या किसे मानते हैं और क्यों? [2023AI]

(A) बेरोजगारी

(B) गरीबी

(C) उद्योग धंधों की कमी

(D) अमीरी

सही उत्तर: (A) बेरोजगारी

व्याख्या: अंबेदकर बेरोजगारी को सबसे बड़ी समस्या मानते हैं। जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक ही पेशे से बाँध देती है। यदि वह पेशा अनुपयुक्त हो जाए तो वह भूखों मरने को विवश हो जाता है, क्योंकि उसे पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती।

5. 'मानव मुक्ति के पुरोधा' किसे कहा गया है? [2021AI]

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) भीमराव अंबेदकर

(D) अमरकांत

सही उत्तर: (C) भीमराव अंबेदकर
व्याख्या: डॉ. भीमराव अंबेदकर ने अपने जीवन में जाति प्रथा और अस्पृश्यता के बंधनों से मानव को मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया, इसलिए उन्हें 'मानव मुक्ति के पुरोधा' कहा गया है।

6. जाति-प्रथा स्वाभाविक विभाजन नहीं है क्यों? [2017AII, 2021AI, 2022AI]

(A) भेदभाव के कारण

(B) शोषण के कारण

(C) गरीबी के कारण

(D) रुचि पर आधारित नहीं होने के कारण

सही उत्तर: (D) रुचि पर आधारित नहीं होने के कारण
व्याख्या: स्वाभाविक विभाजन हमेशा मनुष्य की रुचि और क्षमता पर आधारित होता है। जाति प्रथा मनुष्य की रुचि या व्यक्तिगत भावना का विचार किए बिना, उसे जन्म के आधार पर एक पेशा सौंप देती है, जिससे वह अरुचि के साथ काम करने को विवश होता है।

7. बाबा साहेब अंबेदकर का जन्म किस राज्य में हुआ था? [2014AII, 2016AII]

(A) मध्य प्रदेश

(B) बिहार

(C) उत्तर प्रदेश

(D) बंगाल

सही उत्तर: (A) मध्य प्रदेश
व्याख्या: डॉ. अंबेदकर का जन्म मध्य प्रदेश के महू नामक छावनी में हुआ था।

8. बाबा साहेब भीमराव अंबेदकर का जन्म कब हुआ था? [2019AI, 2020AI]

(A) 14 अप्रैल, 1891 ई० में

(B) 20 अप्रैल, 1892 ई० में

(C) 24 अप्रैल, 1893 ई० में

(D) 28 अप्रैल, 1894 ई० में

सही उत्तर: (A) 14 अप्रैल, 1891 ई० में

व्याख्या: 14 अप्रैल, 1891 ई. को उनका जन्म हुआ, और इस दिन को भारत में 'अंबेडकर जयंती' के रूप में मनाया जाता है।

9. "श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा" के लेखक कौन हैं? [2020AI]

(A) भीमराव अंबेदकर

(B) रामविलास शर्मा

(C) गुणाकर मुले

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

सही उत्तर: (A) भीमराव अंबेदकर

व्याख्या: यह पाठ डॉ. अंबेदकर के प्रसिद्ध भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' का हिंदी अनुवाद और संपादित अंश है।

10. 'आदर्श समाज स्वतंत्रता, समानता, मातृत्व पर आधारित होगा' किसने कहा? [2020AII]

(A) मैक्समूलर

(B) भीमराव अंबेदकर

(C) बिरजू महाराज

(D) अज्ञेय

सही उत्तर: (B) भीमराव अंबेदकर

व्याख्या: डॉ. अंबेदकर ने सच्चे लोकतंत्र यानी आदर्श समाज की कल्पना तीन तत्वों पर आधारित बताई है: स्वतंत्रता (Liberty), समता (Equality) और भ्रातृत्व (Fraternity)।

11. भारत में बेरोजगारी का मुख्य कारण है- [2019AI]

(A) जाति प्रथा

(B) दहेज प्रथा

(C) अशिक्षा

(D) भ्रष्टाचार

सही उत्तर: (A) जाति प्रथा

व्याख्या: लेखक के अनुसार, जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण है, क्योंकि यह श्रमिकों को अपनी बदलती हुई आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती।

12. भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण क्या है? [2018AI]

(A) सती-प्रथा

(B) दहेज प्रथा

(C) जाति प्रथा

(D) बाल-विवाह प्रथा

सही उत्तर: (C) जाति प्रथा

व्याख्या: जाति प्रथा वह प्रत्यक्ष सामाजिक बुराई है जो पेशे के निर्धारण में व्यक्ति की रुचि और क्षमता को दरकिनार करके, बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न करती है।

13. आधुनिक सभ्य समाज श्रम विभाजन को आवश्यक क्यों मानता है? [2018AII]

(A) कार्य-कुशलता के लिए

(B) भाईचारे के लिए

(C) रूढ़िवादिता के लिए

(D) इनमें से कोई नहीं

सही उत्तर: (A) कार्य-कुशलता के लिए

व्याख्या: आधुनिक सभ्य समाज का तर्क है कि श्रम विभाजन (Division of Labour) से ही किसी कार्य में दक्षता (Efficiency) आती है और उत्पादन बढ़ता है, इसलिए यह आवश्यक है।

14. 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ बाबा साहेब के किस भाषण का संपादित अंश है? [2018AII]

(A) द कास्ट्स इन इंडिया : देयर मैकेनिज्म

(B) जेनेसिस एंड डेबलपमेंट

(C) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट

(D) हू आर शूद्राज

सही उत्तर: (C) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट

व्याख्या: यह निबंध डॉ. अंबेदकर के उस ऐतिहासिक भाषण का अंश है जो वर्ष 1936 में जाति-पाति तोड़क मंडल (लाहौर) के लिए तैयार किया गया था, जिसका शीर्षक 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' है।

15. 'भारतीय संविधान' का निर्माता किसे कहा जाता है? [2022AI]

(A) मैक्समूलर को

(B) महात्मा गाँधी को

(C) भीमराव अंबेदकर को

(D) बिरजू महाराज को

सही उत्तर: (C) भीमराव अंबेदकर को

व्याख्या: डॉ. भीमराव अंबेदकर भारतीय संविधान की प्रारूप समिति (Drafting Committee) के अध्यक्ष थे, और उन्हें भारतीय संविधान के निर्माण में उनके अमूल्य योगदान के कारण 'संविधान का निर्माता' कहा जाता है।

16. भीमराव अंबेदकर किसके प्रोत्साहन पर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क गए? [2024AII]

(A) इन्दौर नरेश के

(B) बड़ौदा नरेश के

(C) मेवाड़ नरेश के

(D) राजकोट नरेश के

सही उत्तर: (B) बड़ौदा नरेश के

व्याख्या: डॉ. अंबेदकर को बड़ौदा नरेश (महाराजा सयाजीराव गायकवाड़) ने प्रोत्साहन दिया और उन्हें उच्च शिक्षा के लिए विदेश (पहले न्यूयॉर्क, फिर लंदन) जाने हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की।

17. 'द अनटचेबल्स' किनकी रचना है? [2024All]

(A) महात्मा गाँधी की

(B) यीतन्द्र मिश्र की

(C) भीमराव अंबेदकर की

(D) रामविलास शर्मा की

सही उत्तर: (C) भीमराव अंबेदकर की

व्याख्या: 'The Untouchables' (अछूत) भी डॉ. अंबेदकर की एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है, जिसमें उन्होंने अस्पृश्यता और उससे जुड़े सामाजिक-ऐतिहासिक पहलुओं पर विचार किया है।

18. किसे 'बाबा साहेब' के नाम से पुकारा जाता है? [2024All]

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी को

(B) भीमराव अंबेदकर को

(C) अमरकांत को

(D) रामविलास शर्मा को

सही उत्तर: (B) भीमराव अंबेदकर को

व्याख्या: डॉ. भीमराव अंबेदकर सामाजिक न्याय और समानता के लिए अपने संघर्ष के कारण जनता के बीच 'बाबा साहेब' के नाम से विख्यात और सम्मानित हैं।

19. 'द कास्ट्स इन इंडिया: देयर मैकेनिज्म' किसकी रचना है? [2025AI]

(A) महात्मा गाँधी की

(B) भीमराव अंबेदकर की

(C) अमरकांत की

(D) गुणाकर मुले की

सही उत्तर: (B) भीमराव अंबेदकर की

व्याख्या: यह डॉ. अंबेदकर की शुरुआती रचनाओं में से एक है, जिसका शीर्षक है 'The Castes in India: Their Mechanism'। यह उनके जाति व्यवस्था के गहन अध्ययन को दर्शाती है।